Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 1 अंक: 01, 22 सितम्बर, शुक्रवार 2017, सूरत

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, नीयर सचीन रेल्वे स्टेशन, सूरत-गुजरात

सार समाचार

दाऊद भारत लौटने के लिए कर रहा है केंद्र सरकार से बातचीत: राज ठाकरे

मुम्बई। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने दावा किया कि भगोड़ा अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम भारत लौटने का इच्छुक है और वह इस संबंध में केंद्र से बातचीत कर रहा है एवं केंद्र उसकी वापसी का श्रेय लेना चाहता है। वह यहां अपने आधिकारिक फेसबुक पेज के लांच के दौरान के लोगों के एक समूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, ''दाऊद अब विकलांग हो गया है। अतएव, वह भारत लौटने को इच्छुक है और वह इस संबंध में केंद्र से बातचीत भी कर रहा है। सरकार उसे आम चुनाव से पहले लाएगी और उसका श्रेय लने का प्रयास करेगी मैं कोई मजाक नहीं कर रहा है बल्कि यह सच्चाई है जिसे आप बाद में एहसास करेंगे।'' उन्होंने कहा, ''जब वह भारत लौटने को राजी हो जाएगा तब नरेंद्र मोदी सरकार इसका ढिंढ़ोरा पीटेगी। भाजपा का एक राजनीतिक कदम होगा। ''

जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों के हमले में दो लोगों की मौत

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर में पुलवामा जिले के त्राल में आतंकवादियों ने एक व्यस्त बस अड्डे पर ग्रेनेड फेंककर हमला किया जिसमें राज्य के वरिष्ठ मंत्री नईम अख्तर बाल-बाल बच गये, लेकिन हमले में दो नागरिक मारे गए और छह अन्य घायल हो गये। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि खबर है कि ग्रेनेड हमला 11 बजकर 45 मिनट पर हुआ। हमले में दो लोग मारे गए और छह अन्य घायल हो गये। जम्मू कश्मीर के लोक निर्माण मंत्री अख्तर इस हमले में बाल-बाल बच गये। हमले के बारे में आगे की विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा की जा रही है।

छत्तीसगढ़: सुकमा जिले में पुलिस के साथ मुठभेड़ में एक नक्सली ढेर

रायपुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित सुकमा जिले में पुलिस ने मुठभेड़ में एक नक्सली को मार गिराया है। सुकमा जिले के पुलिस अधिकारियों ने फोन पर बताया कि जिले के पोलमपल्ली थाना क्षेत्र के अंतर्गत पिड़मेल और पालामड़गू गांव के मध्य जंगल में डीआरजी और एसटीएफ के संयुक्त दल ने मुठभेड़ में एक नक्सली को मार गिराया। अधिकारियों ने बताया कि पोलमपल्ली थाना क्षेत्र में संयुक्त पुलिस दल को नक्सल विरोधी अभियान के लिए रवाना किया गया था।

दल जब पिड़मेल और पालामड़गू गांव के मध्य जंगल में था तब नक्सलियों ने पुलिस दल पर गोलीबारी कर दी। पुलिस दल ने भी जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि कुछ देर तक गोलीबारी के बाद नक्सली वहां से भाग गए। इसके बाद पुलिस दल ने क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया तो वहां एक नक्सली का शव, तीन देसी बंदूकें, विस्फोटक और अन्य सामान बरामद हुए। अधिकारियों ने बताया कि मारे गए नक्सली की पहचान क्षेत्र के जनमिलिशिया कमांडर पोड़ियम भीमा के रूप में हुई है।

वह क्षेत्र के 10 गांवों में सक्रिय था। उन्होंने बताया कि भीमा के खिलाफ क्षेत्र में पुलिस दल पर हमले समेत कई नक्सली घटनाओं में शामिल होने का आरोप है। इस महीने की 17 तारीख को सुकमा जिले के पोलमपल्ली थाना क्षेत्र में पुलिस दल ने दो नक्सलियों को मार गिराया था।

ममता को झटका, मुहर्रम सहित सभी दिनों में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन की अनुमति

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने 30 सितम्बर को विजयादशमी के दिन से मुहर्रम सहित सभी दिनों में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन की आज अनुमति दी और पश्चिम बंगाल सरकार को निर्देश दिया कि सुरक्षा के आवश्यक इंतजाम किए जाएं। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश राकेश तिवारी और न्यायमूर्ति हरीश टंडन की खंडपीठ ने राज्य सरकार से कहा कि प्रतिमा विसर्जन और ताजिया जुलूस के लिए अलग-अलग मार्ग का निर्धारण करें। इसने कहा कि 30 सितम्बर को विजयादशमी के दिन से सभी दिनों के लिए दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन होगा। एक अक्तूबर को मुहर्रम के दिन भी प्रतिमा विसर्जन होगा, जिस दिन राज्य प्रशासन ने इस तरह के जुलूस पर रोक लगा दी थी। पीठ ने राज्य सरकार को निर्देश दिया कि निर्धारित मार्ग के बारे में सूचना देने के लिए विज्ञापन लगाएं और समुदायों के बीच सौहार्द सुनिश्चित करने के लिए भी विज्ञापन दें। इसने तृणमूल कांग्रेस सरकार की एक याचिका को खारिज कर दिया, जिसने आदेश पर स्थगन लगाने की मांग की थी। अदालत ने याचिकाकर्ताओं की अपील पर राज्य के अधिकारियों से पूजा की छुट्टियों के बाद तीन हफ्ते के अंदर हलफनामा दायर करने और याचिकाकर्ताओं को उसके अगले दो हफ्ते के अंदर जवाब देने के लिए कहा। मामले पर सुनवाई छुट्टियों के पांच हफ्ते बाद फिर होगी।

उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने विजयादशमी के दिन 30 सितम्बर को दुर्गा पूजा प्रतिमा विसर्जन पर रात दस बजे के बाद रोक लगा दी थी और कहा था कि एक अक्तूबर को मुहर्रम के दिन भी प्रतिमा विसर्जन नहीं होगा। दुर्गा प्रतिमा के विसर्जन पर रोक को चुनौती देने वाली तीन जनहित याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए उच्च न्यायालय ने यह फैसला दिया।

बसपा नेता इंद्रजीत सरोज सपा में शामिल, अखिलेश ने किया स्वागत

लखनऊ (एजेंसी)।

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री इंद्रजीत सरोज आज अपने समर्थकों के साथ समाजवादी पार्टी (सपा) में शामिल हो गये। सरोज सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव तथा अन्य वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में पार्टी में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि जिस तरह से नरेंद्र मोदी के राज में देश में अघोषित आपातकाल है, वैसा ही हाल मायावती की कमान में बसपा में है। पूर्व मंत्री ने कहा कि सपा में बोलने, उठने, बैठने की आजादी है। वह बिना शर्त के सपा में शामिल हो रहे हैं। वह दलितों और दबे-कुचलों के संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे और हर विधानसभा क्षेत्र में जाकर भाजपा की पोल खोलेंगे। चार बार विधायक रह चुके पूर्व बसपा नेता ने कहा, ''हम सपा के सभी नेताओं को आश्वस्त करते हैं कि हम इतनी मेहनत करेंगे कि वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव के बाद प्रदेश में फिर से अखिलेश की सरकार बने। वैसे, उससे पहले हम 2019 में इसका ट्रेलर दिखाएंगे। प्रदेश की भाजपा सरकार ने अपने शुरूआती छह महीने में कोई काम नहीं किया। वह दूसरों के विषय में ही बात कर रही है। वे जनता को आगे भी ठगना चाहेंगे।'' सपा अध्यक्ष अखिलेश ने कहा कि वह सदन में गरीबों, दलितों, पिछड़ों और मजलूमों की आवाज को पहुंचाने और लगातार जमीनी काम करने वाले सरोज और उनके तमाम साथियों का पार्टी में स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा कि सपा में आज शामिल हुए लोग इस पार्टी को अपना घर समझें। यहां लोकतांत्रिक व्यवस्था है और यहां वे अपनी बात रख सकते हैं। वे जिन मूल्यों के लिये संघर्ष करते रहे हैं, इस पार्टी में भी वे उनके लिये जद्दोजहद करके लोगों को न्याय दिला सकते हैं। अखिलेश ने कहा कि आने वाले समय में जब कभी कोई बड़ा राजनीतिक घटनाक्रम होगा तो सही मायने में देखा जाएगा कि उत्तर प्रदेश की जनता किस तरफ जा रही है। हमें भरोसा है कि हमारे नये साथी देश में नया उदाहरण पेश करेंगे। वे गरीबों दलितों को न्याय दिलाने का काम करेंगे। भाजपा पर प्रहार करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश में आखिर में लड़ाई तो समाजवादियों को ही लड़नी है। इतना काम होना बाकी है। मुकाबला ऐसे लोगों से है जिनके पास भ्रामक मुद्दे हैं। पता नहीं चुनाव आते आते कौन सा मुद्दा निकाल दें। उन्होंने कहा ''भाजपा हमें जवाहर बाग की याद दिलाती है लेकिन अपने राम रहीम के बारे में बात नहीं करते हैं। मुझे तो लगता है कि उस मुद्दे को दबाने के लिये कोई और मुद्दा पेश किया है। जनता को बहकाने से रोकने में सरोज और उनके साथी मदद करेंगे।''

जयपुर हवाई अड्डे पर यात्री के पास से पौने तीन किलो सोना बरामद

जयपुर। राजस्थान में जयपुर के सांगानेर हवाई अड्डे पर सीमा शुल्क विभाग ने मस्कट से आये एक यात्री के पास से दो किलो 752 ग्राम सोना बरामद किया है। अधिकारियों ने मुसाफिर को गिरफ्तार कर लिया। एक अन्य व्यक्ति को हिरासत में लिया गया है।

सीमा शुल्क विभाग के अनुसार, मस्कट की उड़ान से कल यहां पहुंचे सीकर निवासी सुभाष चंद की संदिग्ध गतिविधियां देखकर अधिकारियों ने उसे हिरासत में लेकर उसके सामान की तलाशी ली। तलाशी में उसके सूटकेस से सोना मिला। यात्री को गिरफ्तार कर लिया गया। अधिकारियों ने बताया कि जब्त सोने की कीमत करीब 75 लाख रुपये है। विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यात्री ने पूछताछ में सोने को हवाई अड्डे के बाहर किसी व्यक्ति को देने की जानकारी दी। इसके बाद हवाई अड्डे के बाहर प्रतीक्षा कर रहे मोहम्मद खां को हिरासत में ले लिया गया। उससे पूछताछ की जा रही है।

किसानों की आय बढ़ाने के लिये नये क्षेत्रों में प्रवेश करे सहकारिता: मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

शहरों के साथ गांव के विकास की जरूरत को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज कहा कि साल 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिये सहकारिता को मधुमक्खी पालन, समुद्री खरपतवार के उत्पादन जैसे नये क्षेत्रों में प्रवेश करना चाहिए। प्रधानमंत्री ने सुझाव दिया कि हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या किसान थोकमूल्य के आधार पर खरीदे और खुदरा मूल्य के आधार पर अपने उत्पाद बेचे?

सहकारिता आंदोलन के प्रणेताओं में शामिल लक्ष्मण राव इनामदार के जन्मशती समारोह को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि ग्रामीण जीवन में आधुनिक संदर्भ में कृषि क्षेत्र के विकास की दिशा हम सहकारिता के माध्यम से तय कर सकते हैं। साल 2022 में किसानों की आय दोगुनी कैसे हो? ऐसी कौन कौन सी चीजों को जोड़ें और किन गलत आदतों को छोड़ें ताकि कृषि को आधुनिक संदर्भ में आगे बढ़ाया जा सके... यह महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने कहा कि शहर का विकास हो, लेकिन गांव पीछे नहीं छूटे... यह ध्यान रखने की जरूरत है। इसके लिये सम्यक विकास की आवश्यकता होती है, समान अवसर की आवश्यकता होती है। %सम्यक विकास और समान अवसर के मूल में सहकारिता है।'' प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे देश में किसानों की कई समस्याएं हैं लेकिन एक बात देखें कि किसान जो खरीदता है, वह खुदरा मूल्य (रिटेल) के आधार पर और अपने उत्पाद थोक मूल्य के आधार पर। 'यह उल्टा हो सकता है क्या? किसान खरीदे थोक मूल्य के आधार पर और अपने उत्पाद को खुदरा मूल्य के आधार पर बेचे। हमें इस पर विचार करना चाहिए। ऐसा होगा तब उसे (किसान को) कोई लूट नहीं पायेगा, कोई बिचौलिया उसे काट नहीं पायेगा।'' मोदी ने इस संदर्भ में डेयरी उद्योग का उदाहरण दिया और कहा कि डेयरी उद्योग की विशेषता यह है कि यहां किसान थोक मूल्य के आधार पर खरीदता है और बेचता भी थोक मूल्य के आधार पर है। इसमें सहकारिता का मंत्र है और किसानों को आय के साथ सुविधाएं भी मिलती हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, 'डेयरी उद्योग सहकारिता के आधार पर आगे बढ़ा। क्या हम दूसरे क्षेत्र में ऐसी सहकारिता वाली व्यवस्था खड़ी नहीं कर सकते हैं। अभी अनेक ऐसे विषय और क्षेत्र हैं जहां सहकारिता ने कदम नहीं रखा है। अनगिनत ऐसे क्षेत्र हैं जहां सहकारिता की हवा नहीं पहुंची है। ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां एक पीढ़ी को खपना पड़ेगा तब हम उसे खड़ा कर सकते हैं।'' उन्होंने इस संदर्भ में यूरिया को नीम लेपित करने के लिये नीम की फली एकत्र करने और उसे फैक्टरी तक पहुंचाने के लिये सहकारिता को पहल करने, शहद पैदा करने के लिये मधुक्रांति और मुछआरों द्वारा समुद्र के किनारे समुद्री खरपतवार के उत्पादन करने में सहकारिता पहल का सुझाव दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सहकारिता हमारे देश के स्वभाव में है। यह उधार में ली गई व्यवस्था नहीं है। यह देश के चिंतन, स्वभाव और व्यवहार के अनुरूप व्यवस्था है। ऐसे में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिये सहकारिता बहुत बड़ा योगदान कर सकती है। सहकारिता आंदोलन में हाल के समय में उत्पन्न खामियों की ओर इशारा करते हुए मोदी ने कहा कि कालक्रम में व्यवस्थाओं में दोष आते ही हैं। कुछ व्यवस्थाएं कालवाह्य हो जाती हैं। सहकारिता क्षेत्र से जुड़े हर किसी को आत्मचिंतन करते रहना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं समझ रहे हैं कि सहकारिता एक ढांचा हैं, या कानूनी व्यवस्था है। अगर हम यह समझें कि यह केवल संविधान और नियम के दायरे और चौखट में बांधी हुई व्यवस्था है, तब तो गलत हो जायेगा। उन्होंने कहा कि इतना बड़ा देश है तब नियमों, व्यवस्थाओं की जरूरत होगी। क्या करें और क्या नहीं करें.. यह भी जरूरी है। लेकिन सहकारिता केवल इससे नहीं चलती है। सहकारिता केवल एक ''व्यवस्था'' नहीं बल्कि एक ''भावना'' है। इसके लिये संस्कार की जरूरत होती है। मोदी ने कहा कि इसलिये वकील साहब (लक्ष्मण राव इनामदार) कहते थे कि बिना संस्कार, नहीं सहकार। आज नजर आता है कि यह भावना कहीं न कहीं ढांचे में खो गयी है। इसलिये सहकारिता की भावना को ताकत देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सहकारिता आंदोलन का आधार ग्रामीण क्षेत्र रहा है, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता है। इसके साथ ही शहरी क्षेत्र में सहकारिता खड़ी हुई और शहरी बैंकिंग सहकारिता खड़ी हुई। इसके बाद इसके रंग रूप बदलने लगे, ताने बाने बिखरने लगे, शंका कुशंकाओं का दायरा बढ़ता गया। लेकिन आज भी ग्रामीण क्षेत्र में सहकारिता का पवित्र एहसास होता है।

सुनंदा पुष्कर मौत मामला: नए तरीके से जांच करेगी पुलिस

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

दिल्ली पुलिस ने दिल्ली उच्च न्यायालय को बताया कि वह कांग्रेस सांसद शशि थरूर की पत्नी सुनंदा पुष्कर की मौत के मामले में अपराध मनोविज्ञान विधि से जांच शुरू करना चाहती है। पुलिस ने न्यायमूर्ति जी एस सिस्तानी और न्यायमूर्ति चंद्र शेखर की पीठ से कहा कि इस विधि से जांच में अधिकतम आठ सप्ताह का समय लगेगा जिसके बाद वह रिपोर्ट दायर करेगी।

अपराध मनोविज्ञान जांच की एक उभरती विधि है जिसका अभी कुछ विकसित देशों में इस्तेमाल किया जाता है। पुलिस की अपील पर पीठ ने कहा कि जांच 2014 में शुरू हुई थी तथा अब 2017 में पुलिस किसी और तरीके से जांच करना चाहती है। अदालत ने पुलिस से पूछा, ''क्या किसी जांच एजेंसी को जांच को इतने लंबे समय तक खींचना चाहिए?'' इसके जवाब में पुलिस की तरफ से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल संजय जैन ने कहा कि कुछ लोगों से व्यक्तिगत तौर पर पूछताछ से जुड़े जांच के नए तरीके का इस्तेमाल इसलिए किया जा रहा है कि ''कोई भी सबूत छूट ना पाए।'' इसके बाद पीठ ने पुलिस से दो सप्ताह के भीतर हलफनामा दायर करने के लिए कहा जिसमें यह बताया जाए कि जांच को पूरा होने में लगभग कितना समय लगेगा।

सुनवायी के दौरान भाजपा नेता सुब्रह्मणयम स्वामी ने कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग के नजरिए से भी इस मामले की जांच की जानी चाहिए। सुब्रह्मणयम ने सुनंदा पुष्कर की मौत के मामले में अदालत की निगरानी में एसआईटी से जांच कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय को इस मामले में पक्षकार बनाया जाना चाहिए। बहरहाल, अदालत ने इससे इनकार करते हुए कहा कि वह उचित समय पर इस पर विचार करेगी।

अदालत ने कहा, ''हम इस समय किसी भी तरह मामले को भटकाना नहीं चाहते।'' अदालत ने इस मामले पर अगली सुनवाई के लिए 26 अक्तूबर की तारीख तय की। दक्षिणी दिल्ली स्थित एक पांच सितारा होटल में 17 जनवरी 2014 की रात को सुनंदा पुष्कर अपने कमरे में रहस्यमयी परिस्थितियों में मृत मिली थीं।

सोनिया का मोदी को पत्र- 'महिला आरक्षण विधेयक लोकसभा में पारित कराएं'

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कहा है कि उन्हें लोकसभा में अपनी पार्टी के बहुमत का लाभ उठाते हुए महिला आरक्षण विधेयक को पारित करवाना चाहिए। यह विधेयक नौ मार्च 2010 को कांग्रेस नीत संप्रग सरकार के शासनकाल में राज्यसभा में पारित हो चुका है। किन्तु अभी इसको लोकसभा की मंजूरी मिलनी शेष है। सोनिया ने प्रधानमंत्री को इस बात का भरोसा दिलाया है कि उनकी पार्टी महिला आरक्षण विधेयक का समर्थन करेगी। उन्होंने इसे महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। कांग्रेस अध्यक्ष ने मोदी को भेजे पत्र में कहा, ''मैं आपको यह अनुरोध करने के लिए लिख रही हूं कि लोकसभा में आपके बहुमत का लाभ उठाते हुए अब महिला आरक्षण विधेयक को निचले सदन में भी पारित करवाइये।'' यह पत्र 20 सितंबर को लिखा गया है। उन्होंने यह भी स्मरण करवाया है कि कांग्रेस और उनके दिवंगत नेता राजीव गांधी ने संविधान संशोधन विधेयकों के जरिये पंचायतों एवं स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण के लिए पहली बार प्रावधान कर महिला सशक्तीकरण की दिशा में कदम उठाया था। सोनिया ने कहा कि उन विधेयकों को 1989 में विपक्ष ने पारित नहीं होने दिया। किन्तु बाद में 1993 में ये दोनों सदनों में पारित हुए।

आदित्यनाथ और केशव प्रसाद मौर्या ने लोकसभा से इस्तीफा दिया

लखनऊ (एजेंसी)।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या ने आज लोकसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। हाल ही में विधान परिषद के लिए इन दोनों को चुना गया है। लोकसभा सचिवालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि भाजपा के दो सांसदों ने सचिवालय को अपना इस्तीफा सौंप दिया है। आदित्यनाथ जहां गोरखपुर लोकसभा सीट से सांसद थे वहीं मौर्या फूलपुर (इलाहाबाद) संसदीय सीट से चुने गये थे। मार्च में राज्य में भाजपा की भारी जीत के बाद आदित्यनाथ और मौर्या क्रमश: उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री बने थे। पिछले सप्ताह वे राज्य विधान परिषद के लिए निर्विरोध चुने गये थे। इनका इस्तीफा अधिसूचित हो जाने पर चुनाव आयोग दोनों लोकसभा सीटों के लिए उपचुनाव कराये जाने की घोषणा करेगा।

हाल ही में गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर परिकर ने पणजी विधानसभा उपचुनाव में जीत हासिल करने के बाद राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दिया था। वह उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के सदस्य थे। गोवा के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के लिए उन्होंने मार्च में केन्द्रीय कैबिनेट से इस्तीफा दिया था।

राहुल गांधी खुद मैदान छोड़कर भाग रहे हैं: भाजपा

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा नहीं कर पाने को 2014 में संप्रग सरकार की हार और नरेन्द्र मोदी के उभरने की वजह बताने के अमेरिका में दिये राहुल गांधी के बयान को लेकर निशाना साधते हुए भाजपा ने आज कहा कि वास्तव में राहुल गांधी खुद के लिये रोजगार तलाश रहे हैं और खुद मैदान छोड़कर भाग रहे हैं। भाजपा महासचिव राम माधव ने संवाददाताओं से कहा, ''उन्हें दुनिया की यात्रा करने दें और पार्टी के लिये अभियान चलाने दें। हम भारत की चिंता कर लेंगे।'' उन्होंने कहा कि उन्हें (राहुल) यात्रा करने के लिये कुछ और देश बचे हैं। वह मैदान छोड़कर भाग रहे हैं।

भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि कांग्रेस और राहुल गांधी राजनीतिक पाखंड का पर्यायवाची बन गए हैं। जो लोग देश की संस्कृति और संस्कार से अनभिज्ञ हैं, वे भी भारत की सांझी विरासत का दुनिया में मजाक उड़ाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग और राजनीतिक दल अपनी हताश मानसिकता के कारण देश की प्रगति पर पलीता लगाने का प्रयास कर रहे हैं, जो कई दशकों से देश को जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के नाम पर लोगों का राजनीतिक शोषण करने में यकीन करते रहे हैं। भाजपा के वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रवक्ता सैयद शाहनवाज हुसैन ने कहा कि राहुल गांधी देश में जनता द्वारा खारिज किये जाने पर विदेश में भारत की नकारात्मक तस्वीर पेश कर रहे हैं। वे इस बात को भूल रहे हैं कि मोदी सरकार की मुद्रा योजना, स्टार्टअप एवं रोजगारपरक योजनाओं के जरिये नौजवानों के लिये भारी मात्रा में स्वरोजगार का सृजन हुआ है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार देश के नौजवानों को जॉब क्रिएटर (रोजगार सृजन करने वाला) बनाने पर जोर दे रही है, जॉब सिकर (रोजगार मांगने वाला) नहीं बनाना चाहती है। केंद्र सरकार की योजनाओं के तहत दूर दराज के युवाओं को ऋण प्राप्त हो रहे हैं और वे अपना स्वयं का रोजगार खड़ा कर रहे हैं। इससे अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

हुसैन ने कहा कि राहुल गांधी वास्तव में अपने लिये रोजगार की तलाश कर रहे हैं और उनका खुद का कोई 'विजन' नहीं है। उन्हें देश की गलत तस्वीर पेश करने की बजाए सकारात्मक राजनीति करनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने स्वीकार किया कि उनकी पार्टी पर्याप्त संख्या में रोजगार के अवसर पैदा नहीं कर सकी और यही 2014 में उनकी पार्टी की हार का कारण बना। साथ ही उन्होंने कहा कि दुनिया में बेरोजगारी से लोग परेशान हैं और इसीलिए नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रंप जैसे नेताओं को चुन रहे हैं। प्रिंस्टन यूनीवर्सिटी में छात्रों के साथ बातचीत में राहुल कहा कि मैं सोचता हूं, मोदी का कद एक हद तक क्यों उभरा और ट्रंप के सत्ता में आने की वजह, अमेरिका और भारत में रोजगार का मुद्दा है। हमारी बड़ी आबादी के पास कोई नौकरी नहीं है और उन्हें अपना भविष्य दिखाई नहीं दे रहा है। इसलिए वह परेशान हैं, और उन्होंने इस तरह के नेताओं का समर्थन दिया है।

चोरी से कोई धनवान नहीं बन सकता, दान से कोई कंगाल नहीं हो सकता। थोड़ा सा झूठ भी कभी छिप नहीं सकता। यदि तुम सच बोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता करेंगे
चरित्र ही मनुष्य की पूंजी है -एमर्सन

परमाणु युद्ध की आशंका

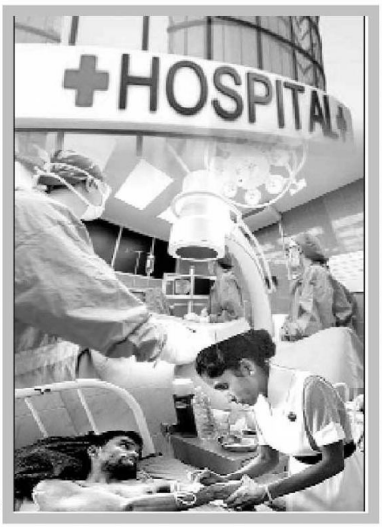

यह सवाल बहस के केंद्र में आ गया है कि पिछले कुछ महीनों से अमेरिका और उत्तर कोरिया के बीच जारी आक्रामक वाकयुद्ध क्या पूरी दुनिया को परमाणु युद्ध की ओर धकेल रहा है? संयुक्त राष्ट्र के महासचिव अंटोनियो गुटेरेज ने उत्तर कोरिया संकट की पृष्ठभूमि में परमाणु युद्ध की आशंका को लेकर अपनी चिंता जाहिर की है। उनकी चिंता से किसी को भी लग सकता है कि वास्तव में संकट गहरा है, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र को पहली बार संबोधित करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने भी उत्तर कोरिया को पूरी तरह से तबाह करने की धमकी दी है। यदि अमेरिका अपने सहयोगी देशों के साथ मिलकर उ. कोरिया के खिलाफ सैनिक कार्रवाई करने के विकल्प पर विचार कर रहा है तो स्थिति विस्फोटक हो सकती है, क्योंकि तब चीन और रूस उ. कोरिया के पक्ष में लामबंद हो सकते हैं। तो क्या यह मान लेना चाहिए कि ऐसी स्थिति समूची मानव जाति विनाश के कगार पर लाकर खड़ी कर देगी? निश्चित रूप से यह डरावना सपना है क्योंकि वर्तमान विश्व राजनीति में ऐसे तत्व भी मौजूद हैं जो परमाणु युद्ध न शुरू करने के लिए बाध्य करते हैं। इसे ''आतंक का संतुलन' कहा जा सकता है। परमाणु संपन्न राष्ट्र परमाणु युद्ध के खतरों से पूरी तरह वाकिफहोने के कारण विवादों को सुलझाने के लिए परमाणु युद्ध के बजाय दूसरे कूटनीति का सहारा लेना बेहतर समझते हैं। इसलिए यह तो नहीं कहा जा सकता कि दुनिया पर आणविक युद्ध का आसन्न खतरा मंडरा रहा है। दरअसल, उ. कोरिया का तानाशाह किम जोंग सनक का शिकार है। वह अपने आक्रामक परमाणु एवं मिसाइल कार्यक्रमों के बलबूते अंतरराष्ट्रीय शक्ति राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाकर अमेरिका को अपने दबाव में लाना चाहता है। यह सच है कि परमाणु शक्ति के बल पर कुछ देशों ने विश्व राजनीति में अपनी प्रतिष्ठा अर्जित की है। पर यह अपवाद जैसा ही है। ब्रिटेन और पाकिस्तान आणविक राष्ट्र हैं लेकिन विश्व राजनीति में क्रमश: अमेरिका और चीन के पिछलग्गू बनकर रह गए हैं। नियंतण्र राजनीति में महाशक्ति बनने के लिए आर्थिक और तकनीकी विकास करना अनिवार्य शर्त है। इसलिए सिर्फ आणविक ताकत के बल पर अमेरिका जैसे महाशक्ति को चुनौती देना किम जोंग के लिए भारी पड़ सकता है। किम जोंग जितना जल्दी इस सच्चाई को समझ लें तो उनके और उनके देश के लिए बेहतर होगा। वरना विश्व समुदाय से अलग-थलग पड़ जाएंगे।

प्वाइंट-टू-प्वाइंट

सबसे पुरानी और बड़ी पार्टी कांग्रेस के दूसरे नंबर के नेता राहुल गांधी की साफ गोई और विदेशी विविद्यालयों में दिए जा रहे उनके भाषणों की चहुंओर र्चचा हो रही है। पहले बर्कले विविद्यालय और फिर अमेरिका के मशहूर प्रिंसटन विविद्यालय में राहुल गांधी की मसलों का प्रभावी चयन, उनकी स्पष्टता और बिना लाग-लपेट के भाषणों का जिक्र आजकल बहस के केंद्र में है। लेकिन सबसे ज्यादा र्चचा है जनता से जुड़े मुद्दों के चयन की। और यही बात लोगों को आर्श्चयचकित भी कर रही है, क्योंकि इससे पहले उन्हें इस तरह प्वाइंट-टू-प्वाइंट बात करते शायद ही देखा गया। यह उनका नया अवतार है। भारतीय राजनीति में तो वह एक बड़े राजनीतिक घराने के युवा और आकर्षक शख्सियत के तौर पर ही जाने जाते हैं। यहां तक कि केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा उन्हें ''नॉन परफार्मर' नेता के तौर पर ही प्रचारित करती है। लेकिन जिस तरह कुछ दिनों से राहुल ने विदेश में विभिन्न मसलों पर केंद्र में सत्तासीन भाजपा की सरकार को घेरा है, उससे उनकी छवि गंभीर और परिपक्व नेता की बनी है। कांग्रेस में भी उनके आक्रामक तेवर को लेकर और उत्साह है। राहुल को इस बात का अच्छे से पता है कि भाजपा की नीतियों को लेकर जनता में पहले जैसी बात नहीं है। जनता में गुस्सा है। यही वजह है कि वो जनता से जुड़ी बातों और परेशानियों को अपने स्पीच में जगह दे रहे हैं। मसलन; बेरोजगारी और असहिष्णुता की बात करना। साथ ही मेक इन इंडिया नीति की विफलता और राजनीतिक पण्राली का केंद्रीकरण के मसले पर राहुल ने बेबाकी से अपनी राय जाहिर की। ऐसा कहने के पीछे राहुल का मंतव्य जनता के मन में भाजपा के खिलाफफ्लिवक्त बना माहौल है, जिसे वह कैश करना चाहते हैं। उन्हें बखूबी मालूम है कि यूपीए के दस साल के शासन में किन-किन बातों और नीतियों को लेकर जनता ने भाजपा को पहली पसंद बनाया था। विदेश में राहुल का कार्यक्रम दरअसल पार्टी की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। पार्टी राहुल को इसी बहाने नियंतण्र समझ रखने वाले नेता के तौर पर स्थापित भी करना चाहती है। वैसे, आम चुनाव में 20 माह बाकी है किंतु कांग्रेस उससे पहले भाजपा की घेरेबंदी कर लेना चाहती है।

सत्संग

श्रेष्ठ बनाने का मतलब

समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। व्यक्ति जैसे होंगे वैसा ही समाज बनेगा। इसलिए व्यक्तियों को श्रेष्ठ बनाने का मतलब है-समय को अच्छा बनाना और समय को अच्छा बनाने का मतलब है-युग के प्रवाह को बदल देना। युग का प्रवाह बदल देना अर्थात समाज को बदल देना। समाज को बदल देना अर्थात व्यक्तियों को बदल देना। दृष्टिकोण हमारा गलत होता है, तो हमारे क्रियाकलाप गलत होते हैं और गलत क्रियाकलापों के परिणाम स्वरूप जो प्रतिक्रियाएं होती हैं, जो परिणाम सामने आते हैं, वे भयंकर दुखदायी होते हैं। इसके निवारण के लिए आवश्यक है मनुष्य का चिंतन और शिक्षण बदल दिया जाए। इसकी चार विधाएं हैं-साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा। ये चारों ऐसे हैं, जिनमें से एक को भी आत्मोत्कर्ष के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। चारों आपस में अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। पहली है-उपासना और साधना। उपासना और साधना -इन दोनों को मिलाकर एक पूरी चीज बनती है। उपासना का अर्थ है-भगवान पर विास, भगवान की समीपता। उपासना माने भगवान के पास बैठना, नजदीक बैठना। इसका मतलब यह हुआ कि उसकी विशेषताएं हम अपने जीवन में धारण करें। उपासना का अर्थ यह है कि हम भगवान का भजन करें, नाम लें, जप करें, ध्यान करें, पर साथ-साथ हम इस बात के लिए भी कोशिश करें कि हम भगवान के नजदीक आते जाएं। हमको ईर जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। ईर जैसे बनें न कि ईर पर हुकुम चलाएं और उनको यह आदेश दें कि आपको ऐसा करना चाहिए। आपको किसी भी हालत में हमारी मांगें पूरी करनी चाहिए। उपासना का तात्पर्य अपनी मनोभूमि को इस लायक बनाना है कि हम भगवान के आज्ञानुवर्ती बन सकें। उनके संकेतों के इशारे पर अपनी विचारणा और क्रियापद्धति को ढाल सकें। उपासना-भजन इसीलिए किया जाता है। साधना-साधना का अर्थ है अपने गुण, कर्म, स्वभाव को साध लेना। वस्तुत: मनुष्य चौरासी लाख योनियों में घूमते-घूमते उन सारे प्राणियों के कुसंस्कार अपने भीतर जमा करके ले आया है, जो मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक नहीं हैं, बल्कि हानिकारक हैं, तो भी स्वभाव के अंग बन गए हैं। इस अनगढ़पन को ठीक कर लेना, सुगढ़पन का अपने भीतर विकास कर लेना, जिसको हम मानवोचित कह सकें-साधना है।

सार्वजनिक अस्पतालों व स्वास्य केंद्रों

सच है कि देश में गंभीर बीमारियों की वजह से होने वाली मौत में लगभग 35 फीसद भागीदारी इन्हीं तीन बीमारियों की है। आयोग की सिफारिश को रोग उन्मूलन की दृष्टि से देखे जाने पर स्पष्ट है कि सरकार लचर पड़ी चिकित्सा व्यवस्था को बल देना चाहती है। इससे इतर दूसरा और मजबूत पक्ष यह भी है कि क्या व्यवस्था के निजीकरण मात्र से आम जनमानस को अपेक्षित लाभ मिल पाएगा? सवाल यह भी है कि जब पूर्णत: सरकारी तंत्रों की निगरानी में कैंसर, हृदय रोग और श्वास रोग आदि पर काबू नहीं पाया जा सका तो क्या गारंटी है।

सतीश पेडणेकर

आयोग द्वारा सार्वजनिक स्वास्य व्यवस्था में एक अभुतपूर्व बदलाव की सिफारिश के तहत स्वास्य सेवा को निजी हाथों में देने की बात कही गई है। पिछले माह घोषित इस योजना के अंतर्गत ''पीपीपी' यानी पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप के तहत जिला स्तरीय सार्वजनिक अस्पतालों व स्वास्य केंद्रों को निजी संस्थानों के साथ सम्बद्ध किया जाना प्रस्तावित है। गैर-संचारी रोगों के इलाज के लिए निजी अस्पतालों की भूमिका बढ़ाने के उद्देश्य से इस मॉडल अनुबंध का प्रस्ताव नीति आयोग और केंद्रीय स्वास्य व परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा किया गया है। प्रस्तावित मॉडल के तहत जिला अस्पताल की इमारतों में निजी अस्पतालों को 30 वर्षो के लिए पट्टे पर जगह व अन्य व्यवस्था मुहैया कराने और देश के आठ बड़े महानगरों को छोड़कर अन्य शहरों में 50 से 100 बेड वाले अस्पताल बनाने के लिए जमीन प्रदान करने की अनुमति दी गई है। निजी निवेशकों को आकर्षित करने के क्रम में आयोग द्वारा अस्पताल परिसर के 60,000 वर्ग फीट जमीन प्राइवेट संस्थान को देने का प्रस्ताव भी है। शर्त है कि जिन जिला अस्पतालों में प्रतिदिन एक हजार से ज्यादा मरीज इलाज के लिए आते हैं; केवल उन्हीं अस्पतालों में निजी व्यवस्था स्थापित की जाएगी।

इस प्रस्ताव को लेकर नीति आयोग की दलील है कि नई नीति के लागू हो जाने से हृदय संबंधी, कैंसर और श्वास रोगों पर काफी हद तक काबू पाया जा सकेगा। सच है कि देश में गंभीर बीमारियों की वजह से होने वाली मौत में लगभग 35 फीसद भागीदारी इन्हीं तीन बीमारियों की है। आयोग की सिफारिश को रोग उन्मूलन की दृष्टि से देखे जाने पर स्पष्ट है कि सरकार लचर पड़ी चिकित्सा व्यवस्था को बल देना चाहती है। इससे इतर दूसरा और मजबूत पक्ष यह भी है कि क्या व्यवस्था के निजीकरण मात्र से आम जनमानस को अपेक्षित लाभ मिल पाएगा? सवाल यह भी है कि जब पूर्णत: सरकारी तंत्रों की निगरानी में कैंसर, हृदय रोग और श्वास रोग आदि पर काबू नहीं पाया जा सका तो क्या गारंटी है कि निजी संस्थानों से सम्बद्धता के बाद मरीजों को सुविधाजनक एवं सस्ता उपचार मिलना शुरू हो जाएगा? यह पहली बार नहीं जब नीति आयोग की ओर से निजीकरण के संकेत मिले हैं।

सर्वप्रथम 2015 में आयोग द्वारा स्वास्य क्षेत्र में निजी निवेशकों और बीमा कंपनियों को मुख्य भूमिका में लाए जाने की कवायद शुरू हो गई थी। इसी दौरान सार्वजनिक चिकित्सा के खर्चो में कटौती करने और इस क्षेत्र में हो रहे निवेश पर काबू पाने और सार्वजनिक स्वास्य सुविधा के तहत मरीजों को निशुल्क मिल रही दवाइयों व अन्य सेवाओं को नियंत्रित करने की भी अनुशंसा की गई थी। हालांकि मंत्रालय द्वारा इस दिशा में अब तक बदलाव की घोषणा नहीं हुई है लेकिन निजीकरण की ओर बढ़ती प्रक्रिया से खासकर गरीब जनसंख्या में अविास का संचार जरूर हुआ है। चिंता है कि निजीकरण का असर उनकी प्राथमिक चिकित्सा को प्रभावित न कर दे। निजीकरण की स्थिति में सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि सरकार पीपीपी मॉडल का संचालन किसके जिम्मे छोड़ेगी? निवेशकों की हिस्सेदारी की स्थिति में निश्चित रूप से उनका भी दबदबा होगा। नीति निर्माण से लेकर, मरीजों से बर्ताव और प्राइवेट डॉक्टरों की मनमानी आमजनों की चिंता के मुख्य बिंदु हैं। वर्तमान व्यवस्था में सरकारी डॉक्टरों द्वारा लापरवाही बरतने, अनुपलब्धता और इलाज को मना किए जाने तक की बात सामने आती रहती है। नई प्रस्तावित व्यवस्था में राहतपूर्ण यह है कि गंभीर हालत के मरीजों को सार्वजनिक अस्पताल परिसरों से परिचालित निजी अस्पतालों में त्वरित देख-भाल के लिए भेजा जा सकता है। इसके लिए चिकित्सा अधीक्षक की अनुमति का प्रावधान है। इसी माह उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के बीआरडी मेडिकल कॉलेज की घटना न सिर्फ सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था पर एक बड़ा तमाचा है बल्कि यह देश भर के सरकारी-प्राइवेट अस्पतालों के लिए आईना भी है। समय-समय पर इस तरह की घटनाएं सरकारी तंत्रों की पोल खोलती रहती हैं। हैरानी है कि भारत पहले से ही स्वास्य क्षेत्र पर सबसे कम खर्च करने वाला राष्ट्र है। कुल जीडीपी का मात्र एक फीसदी हिस्सा देश के सार्वजनिक स्वास्य पर खर्च किया जाता है जो नियंतण्र सूची में निम्नतम है। विकसित राष्ट्रों में यह आंकड़ा लगभग 10 गुना ज्यादा है। 12 वीं पंचवर्षीय योजना यानी 2012 से 2017 के दौरान सरकारी खर्चे में कटौती की गई है। वर्ष

2014-15 के स्वास्य बजट में 5100 करोड़ की कटौती हुई। इस बार सांकेतिक बढ़ोतरी जरूर हुई लेकिन वर्तमान चुनौतियों से लड़ने में नाकाफी है। नये बजट में वर्ष 2017 तक कालाजार और फलेरिया, वर्ष 2018 तक कुष्ठ रोग एवं 2020 तक खसरा एवं 2025 तक टीबी से देश को मुक्ति दिलाने की घोषणा निश्चित रूप से उत्साहवर्धक है लेकिन विश्व स्वास्य संगठन के एक मूल्यांकन के अनुसार भारत को टीबी मुक्त होने में 2050 तक का समय लग सकता है। दो विासपात्र स्रेतों के भिन्न मतों से संशय होना भी लाजिमी है। पिछले कुछ वर्षो में तमाम सुख-सुविधाओं से लैस हजारों की संख्या में बड़े आधुनिक अस्पताल खोले गए हैं लेकिन महंगे इलाज के कारण इन अस्पतालों से भारतीय जनसंख्या के बड़े हिस्से को किसी प्रकार का लाभ नहीं मिल पाया है। ऐसे में संपन्न और आम नागरिकों के इलाज के बीच एक बड़ी खाई बन गई है। स्वास्य बीमा भारतीय संरचना के अनुकूल नहीं है। एनएसएसओ की रिपोर्ट के अनुसार 80 प्रतिशत से अधिक आबादी के पास न तो कोई सरकारी स्वास्य स्कीम है और न ही कोई निजी बीमा। इस दुर्दशा में निजीकरण के बजाय वर्तमान व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण ज्यादा कारगर हो सकता है। सार्वजनिक स्वास्य के लिए अधिक बजट का प्रावधान, अनियमितता के प्रति कड़ी निगरानी, आधारभूत संरचना का विकास, जेनरिक दवाइयों को बढ़ावा आदि बीमार पड़ी चिकित्सा व्यवस्था को पुन: दुरुस्त कर सकता है।

चलते चलते

व्यक्तिगत और पारिवारिक

टायलेट सिर्फ नित्य कर्म के लिए नहीं होता साहब! एक जमाने में तो इसे चिंतन कक्ष के रूप में ही जाना जाता था। व्यक्तिगत और पारिवारिक ही नहीं, बल्कि दुनिया जहान की समस्याओं का निदान यहीं खोजा जाता था। वैसे भी सोच और शौच में बस एक आध हर्फ से ज्यादा फर्क कहां है? कुछ लोग तो सृजनात्मक कार्य भी वहां कर लेते थे। एक किस्सा है साहब कि अब्दाली के हमले के वक्त दिल्ली से बचकर भागे मीर साहब ने एक नवाब साहब के यहां शरण पाई। एक दिन नवाब ने उनसे पूछा-एक दिन में कितने शेर कह लेते हैं, जनाब! मीर साहब ने कहा-कभी एक आध हो जाता है, कभी ज्यादा भी। इस पर नवाब ने कहा-बस! अरे जनाब, बीस-तीस शेर तो मैं बैतुलखुला अर्थात टॉयलेट में कह लेता हूं। इस पर मीर साहब ने कहा-जी जनाब, पर फिर उनमें बदबू भी वैसी ही आती है। जो भी हो, पर नवाब साहब ने यह स्थापित किया, वहां पर सृजनात्मक कार्य भी हो सकता है। बल्कि एक शायर हुए हैं चिरकीं। उन्होंने तो अपने तखल्लुस से ही टॉयलेट और सृजनात्मकता का अभिन्न संबंध स्थापित कर डाला। कुछ लोग तो टॉयलेट में ही सुबह का अखबार पढ़ लेते हैं। पर अब टॉयलेट को प्रेमकथा के लिए भी उपयुक्त स्थल पाया जा रहा है। बताते हैं कि पुराने जमाने की तरह अब दुल्हनिया झुलनियां की मांग नहीं करती-हम गवनवां न जाइबे, बिना झूलनी। बल्कि टॉयलेट की मांग करती हैं। शम्मी कपूर की फिल्मों की तरह या शाहरुख खान की फिल्मों की तरह अब प्रेम कथाओं के पनपने के लिए न कश्मीर न स्विट्जरलैंड की वादियों की जरूरत है। न पेरिस की, न टोकियो की और न ही इंग्लैंड-न्यूयार्क की खूबसूरती की। देश में सिर्फ विचाराधारा ही नहीं बदल रही, सौंदर्यबोध भी बदल रहा है। अब न बारिश की जरूरत है, न फूलों की, न किसी पार्क में जाने की जरूरत है। नदी या समंदर किनारे तो वैसे भी नहीं जाना चाहिए, उनकी हालत तो टॉयलेट से खराब ही है। कचरे से पहाड़ भी कहां मुक्त हैं? ऐसे में टॉयलेट ज्यादा मुफीद है। वैसे भी टॉयलेट अगर चिंतन या अध्ययन के लिए मुफीद जगह हो सकती है तो प्रेम के लिए क्यों नहीं। बल्कि बदलते सौंदर्यबोध के तहत अब तो साहब को भी बाथरूम की बजाय अब टॉयलेट में ही पाया जाना चाहिए।

चिंतन कक्ष के रूप में ही जाना जाता था। व्यक्तिगत और पारिवारिक ही नहीं, बल्कि दुनिया जहान की समस्याओं का निदान यहीं खोजा जाता था। वैसे भी सोच और शौच में बस एक आध हर्फ से ज्यादा फर्क कहां है? कुछ लोग तो सृजनात्मक कार्य भी वहां कर लेते थे। एक किस्सा है साहब कि अब्दाली के हमले के वक्त दिल्ली से बचकर

मुद्दा

मातृसज़ा का दिन

उपासना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आदिकाल से मानव ने सृष्टि की नियामिका शक्ति को स्वीकार किया है। आदि ग्रंथ वेद इसके प्रमाण हैं। आद्यग्रन्थ ऋग्वेद में जहां एक ओर परमतत्व के पुरुष रूप की उपासना की गई है, वहीं दूसरी ओर उसके स्त्रीलिंग की उपासना भी मिलती है। शक्ति उपासना का मूल आधार आद्यग्रन्थ ऋग्वेद की द्यावापृवी की कल्पना है, जिसमें पृवी स्त्री मानी गई है और आकाश पुरुष। इन दोनों के तादात्म्य की र्चचा ऋग्वेद में अनेक बार की गई है। युग्म रूप में इनका अनेक सूत्रों में आह्वान हुआ है, जिनमें इन्हें माता-पिता कहा गया है। आयरे के एक वर्ग ने जहां पितृसत्ता की खोज और उपासना की है, वहीं दूसरे वर्ग ने मातृसत्ता की खोज करके उसकी उपासना एवं महत्त्व का मार्ग निर्दिष्ट किया है। मनु ने सहस्त्र पिताओं की तुलना में एक माता के गौरव को अधिक स्वीकार किया है। माता के प्रति आर्य जाति की इस आस्था ने ही शक्ति पूजा को जन्म दिया। इसी भावना से प्रेरित होकर ऋग्वैदिक काल में देवताओं की पूजा के साथ-साथ देवियों की पूजा के संकेत भी मिलते हैं। ऋग्वेद में पृवी, रात्रि, वाक, सरस्वती, पुरंध्रि, धिष्णा, इडा, वृहद्दिवा, राका, सिनीवाली, पृश्नि, सरण्यू, इन्द्राणी, वरुणानी, अग्नायी, रुद्राणी, अश्विनी और श्रद्धा आदि देवियों का उल्लेख है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के एक सूक्त में वाक् यानी वाणी की देवी के रूप में स्तुति की गई है। इसमें देवी की महिमा का बहुत ही उदात्त वर्णन है। तदनुसार वाक् ही समस्त देव शक्तियों की मूल है। धर्मसूत्रों में भी शक्ति तत्व को स्वीकार किया गया है। धर्मसूत्रों के समान ही गृह्यसूत्रों में शिवपत्नी का उल्लेख है। गृह्यसूत्रों में शिवमूर्ति की उपासना के साथ-साथ देवी पूजन की विधियां बताई गई हैं। इसमें प्रथम बार उनको दुर्गा नाम दिया गया है। रामायण में देवी के दुर्गा नाम का उल्लेख है। एक स्थल पर उन्हें रुद्राणी कहा गया है। ''कालिका उप पुराण' भी शाक्त पुराण है, जिसमें कामाख्या को प्रधान देवी माना गया है। तदनुसार कामाख्या ही प्रधान देवी है, जो वास्तव में विभिन्न कायरे के सम्पादन के लिए नाना रूप धारण करती है। आदि शक्ति के रूप में देवी के स्वरूप का वर्णन मार्कण्डेय पुराणोक्त दुर्गासप्तशती में मिलता है। श्रीमद्देवीभागवत् पुराण शाक्तमत का स्वतंत्र पुराण है, जिसमें देवी को विश्व की नियामिका अधिष्ठात्री चैतन्यमयी शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। ''सर्ववाल्विदमेवाहं नान्यदस्ति सनातनम्' यह लोकार्ध ही देवी भागवत् का मूल वचन है। इसके द्वारा ही देवी भागवत् में वर्णित आद्याशक्ति के वास्तविक स्वरूप के दर्शन होते हैं। स्पष्ट है कि देवी उपासना बहुत प्राचीन है, जिसके उदभव सूत्र आद्यग्रंथ ऋग्वेद के मंत्रों में उपलब्ध होते हैं। शक्ति उपासना का बीजारोपण वेदों से ही हो चुका था। वैदिक युग से प्रारम्भ होकर प्रत्येक युग में शक्ति उपासना प्रचलित थी। शक्ति को स्त्रीरूपा और देवताओं की सहायिका माना गया है। इसके अतिरिक्त इन्हें जगतजननी, सृष्टिकर्ता आदि की भी उपमा दी गई है। दुर्गा सप्तशती में पहली बार उनकी शक्ति रूप की उपासना की गई है, जिसमें नारीत्व की महिमा का वर्णन है। दुर्गा का आविर्भाव विष्णु और रुद्र के क्रोध से हुआ। देवी के शरीर में सभी देवताओं का वास है। बौद्धसिद्धों और तांत्रिकों की देवी उग्रतारा, प्रज्ञापरामिता और महामुद्रा में शक्ति के रूप में देवी दुर्गा की ही कल्पना है। नवरात्रि का यह पर्व विशेषकर आदि शक्ति की पूजा के लिए है, जिसे मां दुर्गा के नाम से पुकारा जाता है। दुर्गा शक्ति की अधिष्ठात्री है। चैत्र और शरद माह के नौ दिन जोकि नवरात्र कहे जाते हैं, शक्ति उपासना के विशिष्ट पर्व माने जाते हैं। सच तो यह है कि नवरात्रि दुर्गा मां के शक्ति स्वरूप का आराधना पर्व है। यथार्थ में यह पूजा आसुरी प्रवृत्ति पर विजय के उपलक्ष्य में होती है। अत: आज जो कुछ हो रहा है, उससे निपटने का जिम्मा केवल पुरु षों का ही नहीं है, स्त्री को भी अपनी अस्मिता की रक्षा की खातिररण में कूदना होगा और इस संक्रमणकाल में समाज की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना होगा।

आर्थिक सुस्ती की फिक्र

आभा स्वामी

हाल में कुछ आर्थिक संकेत ऐसे मिले, जिन्हें सकारात्मक नहीं कहा जा सकता। इनमें सबसे ज्यादा चर्चित चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर का गिरकर 5.7 फीसदी तक चले जाना रहा। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक और चालू खाता घाटे के ताजा आंकड़े भी अच्छे नहीं रहे। जब ऐसी खबरें आती हैं, तो विपक्ष को सरकार पर निशाना साधने के बहाने मिलते हैं। जाहिर है, ऐसा माहौल बनाने की कोशिश हुई है, जैसे कोई बहुत बड़ा आर्थिक संकट खड़ा हो गया हो। विपक्ष ने इस कथित संकट के लिए केंद्र को दोषी ठहराया है। प्रचारित किया है कि एनडीए सरकार की नीतियां वर्तमान स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। खासकर नोटबंदी और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) को लागू करने के तरीके को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश हुई है। मसलन, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा है कि देश के सकल घरेलू उत्पाद में मध्यम एवं लघु उद्योग क्षेत्र का हिस्सा 40 फीसदी है। ये दोनों क्षेत्र नोटबंदी और जीएसटी के कथित दुष्प्रभावों से संकट में हैं। इसका असर जीडीपी वृद्धि दर पर दिख रहा है। बहरहाल, ऐसी नकारात्मक तस्वीर पेश करने की कोशिश में अर्थव्यवस्था से जुड़े स्वस्थ एवं सकारात्मक संकेतों की उपेक्षा कर दी गई है।

हकीकत यह है कि शेयर सूचकांक बेहद ऊंचे स्तर पर बने हुए हैं, देश में रिकॉर्ड मात्रा में विदेशी मुद्रा आई है, डॉलर की तुलना में रुपया अपेक्षाकृत मजबूत बना हुआ है, और हाल में निर्यात बढ़ने के संकेत भी मिले हैं। इन फौरी पहलुओं के अलावा अगर दीर्घकालिक सूरत पर गौर करें, तो भारत का आर्थिक भविष्य सहज ही उज्ज्वल नजर आता है। भारत की सबसे बड़ी ताकत यहां की युवा आबादी है। जनसंज़्या का ये हिस्सा एक ऐसे बाजार का आधार है, जो लंबे समय तक अधिक उत्पादन, बिक्री और मुनाफे का स्रोत बना रहेगा। दरअसल, नोटबंदी और जीएसटी को लागू करके भी सरकार ने आर्थिक खुशहाली का आधार मजबूत किया है।

जीएसटी से आगे चलकर कारोबार करना आसान होगा। नोटबंदी से स्वच्छ अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इससे देशी-विदेशी निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा। यानी समग्रता में देखें तो मायूसी की कोई बात नजर नहीं आती। इसके बावजूद जहां कमजोरी दिख रही है, उसे दुरुस्त करने के कदम फौरन उठाए जाने चाहिए। संतोष की बात है कि केंद्र इसको लेकर जागरूक है। वित्त मंत्री अरुण जेटली कह चुके हैं कि हालात पर सरकार की नजर है और आर्थिक स्थितियां पूरी तरह नियंत्रण में हैं। फिर भी सरकार से उम्मीद है कि वह ऐसे प्रभावी कदम उठाए, जिससे तात्कालिक चिंताओं का भी निवारण हो सके। तब विपक्ष की रणनीति निराधार हो जाएगी। सरकार को आम लोगों की दिक्कतों की चिंता अवश्य करनी चाहिए। अधिक टैक्स के कारण पेट्रोल-डीजल की महंगाई आम लोगों के बीच मुद्दा बन रही है। सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए। क्या आयकर व दूसरे करों में और कटौती संभव है, इस पर उसे विचार करना चाहिए। ऐसे कदमों से उपभोग बढ़ाने में मदद मिलेगी, जिससे अर्थव्यवस्था में नई गति आ सकती है।

प्रभास की फिल्में क्यों देख रही हैं श्रद्धा?

ऐक्ट्रेस श्रद्धा कपूर की फिल्म हसीना पारकर रिलीज होने वाली है। इसी के साथ वह साउथ इंडस्ट्री में भी धूम मचाने को तैयार है। श्रद्धा 'बाहुबली' फेम प्रभास के साथ अगले प्रोजेक्ट 'साहो' के लिए काम कर रही हैं। उन्होंने प्रभास को इम्प्रेस करने के लिए भी तैयारियां कर ली हैं।

श्रद्धा ने हाल ही में सोशल मीडिया पर बताया कि वह 'बाहुबली' से मिलने के लिए काफी एक्साइटेड हैं। श्रद्धा ने प्रभास को इम्प्रेस करने के लिए पूरी तैयारी भी कर ली है। इसके तहत उन्होंने प्रभास की सारी फिल्में देख ली हैं, ताकि उन्हें 'बाहुबली' की ज्यादा से ज्यादा जानकारी हो जाए।

रिपोर्ट्स की मानें तो साहो में श्रद्धा कपूर डबल रोल में नजर आएंगी। वह प्रभास के साथ एक्शन भी करती नजर आ सकती हैं। इस फिल्म के लिए श्रद्धा काफी मेहनत कर रही हैं और उनका सारा फोकस अपना वजन कम करने पर है। यही नहीं, श्रद्धा साहो के लिए तेलुगु और तमिल भाषा भी सीख रही हैं। बाहुबली के बाद प्रभास की यह फिल्म तेलुगु, तमिल और हिंदी भाषा में रिलीज होगी। फिल्म का बजट करीब 150 करोड़ बताया जा रहा है और यह अगले साल तक रिलीज होगी।

संजय दत्त ने शुरू की 'साहब बीवी और गैंगस्टर 3' की शूटिंग

बॉलिवुड अभिनेता संजय दत्त ने गुरूवार यानी 21 सितम्बर से अपनी अगली फिल्म 'साहब बीवी और गैंगस्टर 3' की शूटिंग शुरू कर दी है। संजय दत्त ने नवभारतटाइम्स डॉट कॉम से बातचीत में यह बताया था कि वह 'भूमि' के बाद 'साहब बीवी और गैंगस्टर 3' की शूटिंग शुरू करेंगे। इस फिल्म का निर्देशन तिग्मांशु धूलिया कर रहे हैं। फिल्म के पहले शेड्यूल की शूटिंग बीकानेर में हो रही है। फिल्म में संजय दत्त गैंगस्टर की भूमिका निभा रहे हैं। 'साहब बीवी और गैंगस्टर 3' में संजय दत्त के अलावा जिम्मी शेरगिल, चित्रांगदा सिंह, माही गिल, कबीर बेदी और नफीसा अली भी हैं। फिल्म के सभी सितारों ने बीकानेर पहुंच कर शूटिंग शुरू कर दी है। तिग्मांशु धुलिया के निर्देशन में बन रही इस फिल्म के निर्माता राहुल मित्रा है। फिल्म के लेखक संजय चौहान है। 'साहब बीवी और गैंगस्टर' सीरीज की दो फिल्में बेहद चर्चित रह चुकी हैं। सीरीज के तीसरे पार्ट में संजय दत्त गैंगस्टर के रूप में और कबीर बेदी संजय के पिता की भूमिका करते दिखेंगे। फिल्म में अभिनेत्री नफीसा अली संजय दत्त की मां की भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म की शूटिंग जूनागढ़, गजनेर पैलेस, लक्ष्मीनिवास सहित विभिन्न स्थानों पर करीब पांच दिनों तक होगी। संजय दत्त की फिल्म भूमि 22 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज़ हो रही है। फिल्म का निर्देशन ओमंग कुमार ने किया है। फिल्म के निर्माता भूषन कुमार हैं। यह फिल्म पिता-पुत्री के भावुक रिश्तों पर आधारित है। फिल्म में अदिति राव हैदरी, शेखर सुमन और शरद केलकर भी अहम भूमिकाओं में हैं।

मुझे विश्वास नहीं कि मैं प्रियंका से मिली

सबसे कम उम्र में नोबेल शांति पुरस्कार जीतने वाली मलाला यूसुफजई अपने जीवन के सबसे 'अविश्वसनीय' क्षण की साक्षी बनीं। 20 साल की मलाला को हाल में परोपकार पर हुए छठें अनुअल फोर्ब्स 400 सम्मेलन में बोलने का मौका मिला। उन्होंने अपनी प्रियंका चोपड़ा के साथ ली गई एक तस्वीर को शेयर किया है।

इस फोटो पर कैप्शन देते हुए उन्होंने लिखा, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि मैं प्रियंका चोपड़ा से मिली!'

ये पहला मौका नहीं है जब ये दो ग्लोबल आइकन एक दूसरे से मिले हों। 2013 में प्रियंका को एजुकेशन ऐक्टिविस्ट मलाला से मिलने का मौका मिला था जब ग्लोबल लीडर्स के लिए यूनाइटेड नेशन्स में स्पेशल डिनर का इंतजाम किया गया था। सम्मेलन में मलाला ने एक मीटिंग अटेंड की जिसमें उन्होंने कहा, 'लड़कियों के रूप में हमारे पास दुनिया का सबसे बड़ा संसाधन है। लेकिन हम इस संसाधन को खोते जा रहे हैं। हम एक बड़ी संपत्ति खो रहे हैं।' लड़कियों के लिए लड़ने वाली मलाला को खुद उनके घर पाकिस्तान में पढ़ने से रोका गया था। पिछले कुछ सालों से उन्हें यूएन जनरल असेंबली में बोलने के लिए बुलाया जा रहा है। हर साल वह दुनिया के नेताओं को लड़कियों के लिए काम करने और शरणार्थियों की शिक्षा पर जोर देने के लिए कहती हैं।

'हसीना' में तो नहीं लगा है दाऊद का पैसा, मुंबई पुलिस के पास मामला

'शूटआउट एट लोखंडवाला' बनाने वाले अपूर्व लाखिया ने श्रद्धा को 'हसीना पारकर' बना तो दिया लेकिन उनकी यह फिल्म बुरी वजहों से चर्चा में है। दाऊद इब्राहिम के भाई इकबाल कास्कर को फिरौती के मामले में गिरफ्तार करने के बाद अब मुंबई के थाणे पुलिस इस जांच में जुटी है कि 'हसीना' में भी यही पैसा तो उपयोग में नहीं लाया गया है। यह फिल्म कल यानी शुक्रवार को रिलीज होना है। बता दें कि यह फिल्म अंडरवर्ल्ड डॉन दाउद इब्राहिम की बहन हसीना पारकर पर केंद्रित हैं। फिल्म में हसीना पारकर और दाउद के रिश्ते की बात की गई है। दोनों भाई-बहन का रिश्ता बहुत मजबूत माना जाता था।

थाणे के कमिश्नर परमबीर सिंह का कहना है 'यह गैंग पहले भी फिरौती की रकम का उपयोग फिल्मों को फायनेंस करने में करता रहा है। अब हम जांच कर रहे हैं कि हाल ही में ऐसा तो नहीं किया गया है।' बता दें कि पिछले साल नवंबर में दाऊद का परिवार इस फिल्म के सेट पर श्रद्धा कपूर से मिलने पहुंचा था। फिल्म में दाउद इब्राहिम का किरदार सिद्धांत कपूर निभा रहे हैं जो कि रियल लाइफ में भी श्रद्धा के भाई है। पहले श्रद्धा कपूर की इस फिल्म का नाम 'हसीना – द क्वीन ऑफ मुंबई' था, अब इसे 'हसीना पारकर' कर दिया गया है। अपूर्व लाखिया के निर्देशन में बनी इस फिल्म की रिलीज डेट पहले 14 जुलाई 2017 तय की गई थी। इसके बाद इसे 18 अगस्त के लिए तय किया गया है। अब यह 22 सितंबर को लग रही है।

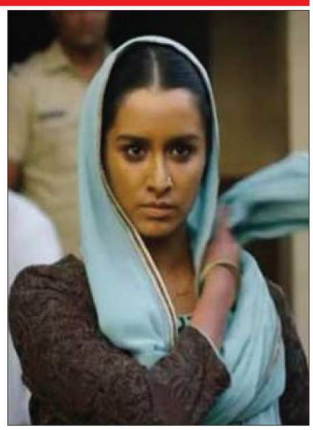

ऑडियंस ऐक्टर नहीं, कैरक्टर देखना चाहती है : राजकुमार

ऐक्टर राजकुमार राव अपनी पिछली फिल्म 'बरेली की बर्फी' में निभाए प्रीतम विद्रोही के अपने किरदार के लिए अभी तक वाहवाही बटोर ही रहे थे कि अब इस हफ्ते वह 'न्यूटन' के रूप में फिर पर्दे पर आ रहे हैं। इस फिल्म में राजकुमार अपनी ड्यूटी के प्रति बेहद समर्पित एक चुनाव अधिकारी के किरदार में हैं, जो नक्सली इलाके में ईमानदारी से नियमपूर्वक चुनाव कराने के लिए जी-जान लगा देता है। इसी सिलसिले में हमने राजकुमार से की यह छोटी सी बातचीत

अपने हर किरदार की तरह इस रोल के लिए भी राजकुमार ने पहले खूब रिसर्च की। चुनाव अधिकारी की तमाम जिम्मेदारियों और रूल बुक वगैरह को उन्होंने पढ़ा। वह बताते हैं, 'यूं तो इस फिल्म की कहानी में ही काफी कुछ था, लेकिन मेरे डायरेक्टर अमित ने मुझे पूरा मैनुअल दिया था कि एक चुनाव अधिकारी की क्या-क्या जिम्मेदारियां होती हैं। मेरे लिए यह एक आंखें खोल देने वाला अनुभव था, क्योंकि हमने हमेशा बाहर से ही देखा था कि इलेक्शन होता है और हम वोट डाल देते हैं, लेकिन कितने बड़े लेवल पर इलेक्शन कमिशन यह काम करवाता है और कितने करोड़ रुपए इसमें खर्च होते हैं, यह जानना मेरे लिए एक अलग ही अनुभव था। फिल्म करने के बाद पता चला कि इलेक्शन कराना इतना आसान काम नहीं है, जितना सुनने या देखने में लगता है।'

पिताजी से सीखी मैंने ईमानदारी

आज के दौर में ईमानदार लोगों की संख्या घटती जा रही है और ऐसे लोगों को कई बार अपनी ईमानदारी का खामियाजा भी भुगतना पड़ता है। न्यूटन के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है, लेकिन राजकुमार के मुताबिक, 'ऐसा नहीं है कि दुनिया से ईमानदार अब खत्म हो गई है। अभी भी बहुत से ईमानदार लोग हैं, जिनकी वजह से यह दुनिया चल रही है।' वह बताते हैं, 'मेरे पिता बहुत ज्यादा ईमानदार इंसान थे। वह सरकारी नौकरी में थे और चाहते तो बहुत पैसा बना सकते थे, लेकिन उन्होंने वह रास्ता नहीं चुना, जिसकी वजह से हमें मुश्किल दौर भी देखना पड़ा, लेकिन उनसे मैंने बहुत कुछ सीखा।'

ऐश्वर्या और अनिल सर के साथ काम को लेकर एक्साइटेड

राजकुमार राव जल्द ही राकेश ओमप्रकाश मेहरा की फिल्म 'फन्ने खान' में ऐश्वर्या राय बच्चन केऑपोजिट नजर आने वाले हैं। ऐश्वर्या के साथ काम करने को लेकर काफी एक्साइटेड हैं। उनका कहना है, 'मैं इस फिल्म में ऐश्वर्या और अनिल सर (अनिल कपूर), दोनों के साथ काम करने के लिए बहुत एक्साइटेड हूं, क्योंकि ये दोनों ही बहुत बेहतरीन कलाकार हैं।'

मेरे अंदर भी एक न्यूटन है

राजकुमार का कहना है कि काम के मामले में वह भी न्यूटन की तरह ही आदर्शवादी हैं। बकौल राजकुमार, 'मेरे अंदर भी एक न्यूटन है, खासकर काम के लिहाज से, क्योंकि जब काम की बात आती है, तो उस मामले में मैं भी बहुत आदर्शवादी हूं। मेरे भी अपने कुछ सिद्धांत हैं, जिनके हिसाब से ही मैं चलता हूं। काम की बात हो, तो मैं किसी के लिए भी उन सिद्धांतों को बदल नहीं सकता। न्यूटन की तरह मैं भी अनुशासन पसंद हूं। मुझे कई बार अपने इन सिद्धांतों का खामियाजा भी भुगतना पड़ता है, लेकिन यह देखकर खुशी भी होती है कि मैं अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पर जी रहा हूं, वरना तो यहां एक भेड़चाल होती है कि ये चलता आ रहा है, यही लोग करते आ रहे हैं, तो आप भी वही करो।'

अब कॉन्टेंट ही किंग है

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए राजकुमार कहते हैं, 'मैंने शुरू से ही स्टीरियोटाइप वाली फिल्मों के बजाय कहानियों और किरदारों को अहमियत दी है। जब मैं ऐक्टर बनने आया था, तो इंडस्ट्री में बदलाव का यह दौर बस शुरू ही हुआ था। मैं चाहता तो उसी सेट रास्ते पर चल पड़ता, लेकिन एक-दो फिल्मों को छोड़ दें, तो 'लव, सेक्स और धोखा', 'काई पो चे', 'शाहिद', 'क्वीन', 'सिटी लाइट्स', 'अलीगढ़' जैसी तमाम लीक से हटकर बनी फिल्में ही मैंने चुनीं। जब 'लव, सेक्स और धोखा' आई, तो लोग शॉक्ड थे कि ये क्या सिनेमा है। उस फिल्म ने बहुत से लोगों का नजरिया बदला। बहुत से लोग उससे प्रेरित हुए कि आप डिजिटली भी फिल्म बनाकर रिलीज़ कर सकते हो। मैं बहुत खुश हूं कि मैं उस फिल्म का हिस्सा बना। अब तो इन सात सालों में कॉन्टेंट ही किंग बन गया है। अब लोग ऐक्टर्स के बजाय कैरक्टर्स को पर्दे पर देखना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि ऐक्टर्स अब कैरक्टर्स को निभाए, न कि खुद को।'

अखिल भारतीय श्री जीण माता सेवा संघ द्वारा 24 सितंबर को ध्वज चुनर धर्म-यात्रा का आयोजन

सूरत। अपने अनुठे कार्यक्रमों के लिए सुप्रसिद्ध सूरत की अग्रणी सामाजिक संस्था श्री अखिल भारतीय जीण माता सेवा संघ सूरत द्वारा नवरात्रा के पावन पर्व पर विगत 12 वर्षो से आयोजित होनेवाली ध्वज चुनर धर्म-यात्रा इस वर्ष 24 सितत्बर, 2017 रविवार प्रात: 10 बजे परवत पाटिया विस्तार स्थित वाटिका टाउनशिप सोसायटी में आयोजित होने जा रही है। जात-पात से परे हटकर मां नाम से अभिभूत सूरत का हर एक लाडला आज तक इस यात्रा में जुड़ता हुआ आया है। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुये कार्यक्रम संयोजक गोविन्द जिंदल ने बताया कि इस वर्ष की यात्रा का मुत्य आकर्षण 151 मीटर लत्त्बी एक चुनरी रहेगी। जो नवरात्रा के पावन पर्व पर भत्तों द्वारा नाचते-गाते हुए मां अत्त्बा को सुअर्पित कर कन्या भ्रूण हत्या बन्द हो ऐसी मां से प्रार्थना की जायेगी। साथ ही सैकडो ध्वज भी यात्रा का आकर्षण बढायेंगे। श्री जीण माता संघ द्वारा अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए एक अनुठा अभियान मतदान जागृति अभियान का शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान किया जायेगा। जिसके अंतर्गत विश्व इतिहास में प्रथम बार 51 फीट लत्त्बे मतदान जन जागृति बैनर का विमोचन सूरत शहर के जिला कलेत्टर महेन्द्र पटेल द्वारा कार्यक्रम के दौरान किया जायेगा।

23 सितम्बर को पासपोर्ट मेले का आयोजन

सूरत। क्षेत्रिय पासपोर्ट कार्यालय, सूरत पासपोर्ट सेवाओं को आसान बनाकर इस क्षेत्र के सभी नागरिकों तक उनकी सुलभ पहुंच बनाने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी दिशा में पासपोर्ट बनवाने के लिए बढती हुई मांग की स्थिति से निटटने के लिए 23 सितत्बर 2017 को पासपोर्ट मेले का आयोजन किया जा रहा है। मेले में आवेदनों की स्वीकृति केवल ऑनलाइन नियुत्ति के आधार पर की जायेगी एवं कुल एक हजार नियुत्तियां आवेदकों के लिए खोली जायेगी। यह विशिष्ट अभियान होने के कारण स्पष्ट मामले वाले केवल उन्हीं आवेदकों को आवेदन करने की अनुमति है जिनके पास पासपोर्ट बनवाने हेतु आवश्यक पूर्ण दस्तावेज हैं, जिसका उद्देश्य उस दिन अधिकाधिक पासपोर्ट जारी करना है। प्रस्तावित मेले के लिए नियुत्ति लेने हेतु आवेदकों को पासपोर्ट वेबसाइट डत्त्युडत्त्युडत्त्यु डॉट पासपोर्टइंडिया डॉट गर्वमेन्ट डॉट इन पर आवेदन करना पडेगा। उन्हें नियुत्त समय पर आवेदक संदर्भ संत्या एवं नियुत्ति पत्र और दस्तावेजों की छायाप्रति सहित सभी मूल दस्तावेजों के साथ आना पडेगा।

लसकाणा से 9 जुआरी गिरफ्तार

सूरत। सूरत-कामरेज रोड पर स्थित लसकाणा गांव में खुली जगह में जुआ खेल रहे 9 जुआरियों को स्टेट मोनीटरिंग सेल ने छापा मार गिरत्तार किया तथा उनके पास से कुल 60,600 रुपये का माल जत्त किया। पुलिस सूत्रों के अनुसार राज्य की स्टेट मोनीटरिंग सेल के हेड कांस्टेबल शैलेन्द्रसिंह साहेबसिंह को मिली गुप्त जानकारी के आधार पर बुधवार शाम साढे सात बजे लसकाणा गांव में खुली जगह में चल रहे जुए के अड्डे पर छापा मारा गया। पुलिस ने छापे दौरान जुआ खेल रहे माधवभाई नानसिंग वसावा, तुलसी नाथुभाई पटेल, धनजी शामजीभाई मांगुकिया, प्रकाश दयाराम पारधी, मंगुभाई हीरभाई गाबु, राजेश नमाभाई तडवी, महेश ठाकोरभाई गागडी, गोरीश ईश्वरभाई गाबु और मनहर उर्फ मनु मोतीभाई पटेल को रंगे हाथों गिरत्तार कर नकद और मोबाइल फोन सहित कुल 60,600 रुपये का माल जत्त किया। सेल की इस कार्यवाही से सरथाणा पुलिस में हलचल मच गई। फिलहाल सरथाणा पुलिस ने 9 जुआरियों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की कानूनी कार्यवाही शुरु की है।

सफाई कामदार की पार्क की गई रिक्शा

सूरत।। पालिका के अठवा जोन में सफाई काम करनेवाले कामदार की रिक्शा में से लाश मिली। तीन दिन से लापता सफाई कामदार की मत्काई पुल समीप पार्क की गई रिक्शा में से लाश मिली। जिससे उसके शव को पोस्टमार्टम हेतु नई सिविल ले जाया गया। रुद्रपुरा क्षेत्रपाल मंदिर समीप छप्पन की चॉल में रहनेवाले जयेश मणीलाल खरोडिया (उम्र 42 वर्ष) पिछले तीन दिन से लापता थे। एसएमसी में सफाई कामदार होने के साथ रिक्शा भी चलाते थे। जिनका मृतदेह आज मत्काई पुल समीप पार्क की गई रिक्शा में से मिली। जिससे 108 की सहायता से मृतदेह को पीएम हेतु सिविल हॉस्पिटल ले जाया गया। प्राथमिक जांच में मृतक के दाहिने हाथ में झुलसने का निशान मिला। मृतक के परिवार में तीन पुत्री, एक पुत्र और पत्नी का समावेश होता है।

व्यापारी के साथ 2 लाख की ठगी

सूरत। राजकोट के ठग व्यापारी ने 3.39 लाख रुपये की कीमती साडियों का जत्था वराछा के व्यापारी से खरीदने के बाद बकाया 2.05 लाख रुपये का पैमेन्ट न देकर ठगी की। जिसके खिलाफ पुलिस शिकायत दर्ज कराई गई है। पुलिस सूत्रों मोटा वराछा सुदामा चौक इन्द्रलोक रेसिडेन्सी में रहनेवाले और साडी के व्यवसाय से जुडे व्यापारी सतीषभाई भुपकभाई वडछक के पास से गत 2015 की साल में अप्रैल माह में राजकोट के कालावड क्षेत्र में रहनेवाले ठग व्यापारी गोपालभाई अजुडिया ने उधार में 3,39,550 रुपये की 806 नंग साडियां खरीदी थी। जिसके पैमेन्ट की सतीषभाई द्वारा वारंवार उगाही किये जाने पर इस ठग ने विगत दो वर्ष में 3.39 लाख में से मात्र 1,34,150 रुपये का पैमेन्ट दिया। बाकी के पैमेन्ट नहीं दिये। जिससे व्यापारी सतीषभाई ने तंग होकर वराछा पुलिस में राजकोट के ठग व्यापारी के खिलाफ ठगी की शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के आधार पर वराछा पुसिल आगे की जांच कार्यवाही कर रही है।

वासणिया महादेव के दर्शन कर वाघेला ने शुरू किया चुनाव प्रचार

अहमदाबाद। हाल ही में जन विकल्प मोर्चा से जुड़े कांग्रेस के पूर्व वरिष्ठ नेता शंकरसिंह वाघेला ने गुरुवार को गांधीनगर स्थित वासणिया महादेव के दर्शन कर चुनाव प्रचार का श्रीगणेश कर दिया। वाघेला लगातार 13 दिनों तक राज्य के विभिन्न विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव प्रचार करेंगे। पिछले कई दिनों से राज्यभर में जन विकल्प मोर्चा के बैनर-पोस्टर को लेकर लोगों में चर्चा थी कि इसके कर्ता धर्ता शंकरसिंह वाघेला हैं। लेकिन वाघेला ने जन विकल्प मोर्चा के पीछे होने से इंकार कर दिया था। दो दिन पहले शंकरसिंह वाघेला ने पत्रकार परिषद बुलाई और जन विकल्प मोर्चा से जुड़ने का ऐलान कर दिया। साथ ही वाघेला ने चुनाव लड़ने से भी इंकार किया। वाघेला ने कहा कि गुजरात में जन विकल्प तीसरे मोर्चा के तौर पर उभरकर सामने आएगा। गुजरात में राज्यसभा चुनाव से ठीक पहले अपने जन्म दिन पर कांग्रेस छोड़ने के साथ ही कहा था कि वे किसी भी राजनीतिक दल में शामिल नहीं होंगे। लेकिन जन विकल्प मोर्चा में शामिल होकर उसके लिए आज से चुनाव प्रचार का श्रीगणेश कर दिया है। वाघेला ने आज सुबह 8 बजे गांधीनगर से चुनाव प्रचार प्रारंभ किया। जिसमें उन्होंने सबसे पहले वासणिया महादेव और महुडी के दर्शन करने के बाद अंबाजी-खेडब्रह्मा रवाना हो गए। अंबाजी के दर्शन करने के बाद वाघेला ने दांता, जलोत्रा,

मगरवाडा, छापी गांव के लोगों से मिलेंगे। जहां वे ऊंझा पहुंचे और उमिया माता के दर्शन कर गांधीनगर लौट आए। 22 सितंबर को वाघेला गांधीनगर से कठलाल-छीपडीपति होते हुए फागवेल जाएंगे। फागवेल से डाकोर जाएंगे, जहां रणछोड राय के दर्शन कर हालोल होते हुए पावागढ़ जाएंगे। जहां महाकाली माता के दर्शन करेंगे और वहां से चांपानेर, बोडेली और वडोदरा होते हुए गांधीनगर लौटेंगे। 24 सितंबर को वाघेला गांधीनगर से तलोद, धनसुरा, मोडासा होते हुए जूनागढ़ पहुंचेंगे और वहां रात्रि विश्राम करेंगे। 25 सितंबर को सुबह सोमनाथ के दर्शन कर एक जनसभा को संबोधित करेंगे और वहांसे केशोद, जेतपुर होते हुए कागवड स्थित खोडलधाम जाएंगे। 26 सितंबर राजकोट में पत्रकार परिषद कर सामखियाली, हाजीपीर होते हुए कच्छ स्थित माता के मढ जाएंगे। जहां आशापुरा माता के दर्शन कर भुज में रात्रि विश्राम करेंगे। 27 सितंबर को जमनगर में प्रेस कोन्फ्रेंस कर खंभालिया होते हुए द्वारका जाएंगे और द्वारकाधीश के दर्शन कर वहां रात्रि विश्राम करेंगे। 28 सितंबर को द्वारका से राजकोट, जदण होते हुए धेला सोमनाथ, गढ़डा होकर बोटाद आएंगे।

बोटाद से सारंगपुर स्वामीनारायण मंदिर में दर्शन कर गांधीनगर लौटेंगे। जिसके बाद 30 सितंबर को अहमदाबाद के वस्त्रापुर लेक पर डिजिटल रावण दहन के कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे। 1 अस्त्टबर को डभोई होते हुए राजपीपला, देवमोगरा होते हुए नवसारी जाएंगे। 2 अस्त्टबर को नवसारी से दांडी और दांडी से सूरत ऊन पाटिया में मुस्लिम समुदाय के कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। जिसके बाद बीआरसी के निकट पाटीदारों के एक कार्यक्रम में शामिल होंग। कार्यक्रम के बाद सूरत सक्रिट हाउस में विभिन्न समुदाय के नेताओं के साथ चर्चा करेंगे। 3 अस्त्टबर को सूरत में वाघेला प्रेस कांफ्रेंस करेंगे और उसके पश्चात ओलपाड, हांसोट, अंकलेश्वर-भरुच, वागरा और पादरा होते हुए गांधीनगर लौटेंगे।

तातीथैया गांव में शराब भरी वान पकडने पर बुटलेगरो का पुलिस पर हमला

पुलिस द्वारा किया गया लाठीचार्जः पांच बुटलेगर गिरफ्तार

सूरत। कडोदरा क्षेत्र में बुटलेगर बेलगाम हो गये हैं पुलिस की छत्रछाया में चल रहे शराब-जुए के अड्डे वाले अब पुलिस पर हमला कर रहे हैं।

तातीथैया गांव में शराब भरी वान छुडाने के लिए बुटलेगरो ने कोडरा जीआईडीसी पुलिस पर हमला किया। पुलिस गाडी में तोडफोड कर पुलिस कर्मियों पर हमला किये जाने पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। जिसके बाद पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पांच लोगों को गिरत्तार किया।

कडोदरा जीआईडीसी पुलिस को मिली गुप्त जानकारी के आधार पर पुलिस टीम ने तातीथैया गांव करण नहर के पास सारथी टाउनशिप में छापा मार शराब भरी पकड कानूनी कार्यवाही शुरु की थी। इस दौरान बुटेलगरो के टोले ने पहुंच हंगामा मचाया। पुलिस पर पथराव किया जिसमें पुलिस कर्मी जत्मी हो गये और गाडी में तोडफोड की। बेलगाम बने बुटलेगरो के टोले को बिखेरने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज किया। जिसके बाद पुलिस ने वीडियो फुटेज के आधार पर आरोपी कल्लु उर्फ परमानंद राममिलन, पुना भीखा वाघमशी, अनुप रामक्रिष्ना मिश्रा, मनोज मुरली पांडे, विनोदकुमार कुलराज को कोत्चिंग कर गिरत्तार किया। जबकि बाकी के अन्य की खोजबिन जारी है।

इमरजन्सी सेवा 108 के कर्मचारियों ने काली पट्टी धारक करके किया विरोध प्रदर्शन

सूरत। 108 एम्ब्युलेंस सेवा में कार्यरत कर्मचारियों ने शोषण के खिलाफ एक बार पुनः आंदोलन का मार्ग अख्तियार किया है। आज सूरत में 108 एम्ब्यूलेंस सेवा के कर्मचारियों ने काली पट्टी धारण कर कार्य किया। जीवीके ईएम आरआई के कर्मचारियों की 14 मांग संतोषित होने की घोषणा की थी। यह घोषणा 20 जुलाई 2017 को गई थी। लेकिन घोषणा के अनुसार एक भी मांग का अमल अभी तक नहीं किया गया। 108 इमरजन्सी एम्ब्यूलेंस सेवा के कर्मचारी शैलेष आर. जाट ने कहा कि जीवीके ने घोषित की एक भी मांग का अमल नहीं किया गया। उससे विपरित आज भी कर्मचारियों को निकाला जा रहा है। उपरी अधिकारी कर्मचारियों को गलत ढंग से परेशान कर रहे हैं। आगामी दिनों में हमारी मांग का अमल नहीं किया गया तो आज से तीन दिन तक काली पट्टी धारण करने के बाद भूख हडताल सहित का कार्यक्रम दिया जायेगा।

उकाई डेम में 24 हजार क्युसेक पानी की आवक के साथ स्तर 321.60 फुट

सूरत। दक्षिण गुजरात के किसानों सहित लोगों के लिए अच्छी बात है कि उकाई के उपरी क्षेत्र में स्थित तकरीबन तमाम जलग्रहण क्षेत्रों में सामान्य बारिश दर्ज होने के साथ उकाई डेम में 24 हजार क्युसेक पानी की आवक हो रही है। उकाई डेम के स्तर में मंद गति से वृद्धि होने के साथ डेम का स्तर आज दोपहर 321.60 फुट दर्ज किया गया। सिंचाई विभाग के सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार विगत चौबीस घंटे दौरान उकाई के उपरी क्षेत्र में स्थित जलग्रहण क्षेत्रों में सामान्य बारिश दर्ज हुई है। जिसमें टेस्का में 13 मिमी, लखपुरी में 10 मिमी, चीखलधरा में 7 मिमी, गोपालखेडा में 4 मिमी, देडतलाई में 11 मिमी, बुरहानपुर में 24 मिमी, यरली में 47 मिमी, हथनुर में 30 मिमी, भुसावल में 28 मिमी, गीरना में 10 मिमी, दहीगाम में 92 मिमी, धुलीया में 7 मिमी, सावखेडा में 4 मिमी, गीधाडे में 26 मिमी और सारनखेडा में 36 मिली मीटर मिलाकर कुल 354 मिली मीटर बारिश दर्ज की गई। उकाई के उपरी क्षेत्र में स्थित हथनुर डेम का भयजनक जलस्तर 214 मीटर है जिसके सामने आज डेम का स्तर 213.500 मीटर पहुंचने के साथ सुबह 9 बजे से हथनुर डेम के आठ दरवाजे आधे मीटर तक खोल 12,995 क्युसेक पानी की डिस्चार्ज किया जा रहा है।

गरबा महोत्सव आज से

सभी आयोजन इनडोर, बारिश नहीं डाल पाएगी खलल

सूरत.नवरात्रि का उत्सव गुरुवार को शुरू होने के पहले बुधवार की शाम से ही गरबा की धूम मच गई। शहर के कई स्थानों पर गरबा का आयोजन किया गया, जिनमें लोगों का उत्साह देखने लायक था। गुरुवार से श्रद्धालु देवी मां की पूजा के साथ धूमधाम से गरबा खेलेंगे।

बुधवार की शाम वीआर मॉल में प्री-गरबा का आयोजन किया गया। इसमें महिलाओं के साथ पुरुषों भी पारंपरिक परिधान पहनकर गरबा खेला। यहां नौ दिनों तक गरबा खेला जाएगा।

कार्यक्रम को वीआर वन ने आयोजित किया है। कार्यक्रम के मीडिया पार्टनर भास्कर ग्रुप है। बारिश की संभावना को देखते हुए कई जगह इंडोर गरबा आयोजित किया गया है।

यहां होगा इंडोर गरबा

इस साल बारिश के मौसम को देख ?ते हुए अठवागेट स्थित इंडोर स्टेडियम, सरथाणा डोम, डूमस रोड स्थित स्वर्णभूमि पार्टी प्लाट और वराछा डोम में इंडोर गरबा का आयोजन किया गया है।

24 घंटों में हो सकती है भारी बारिश

मौसम विभाग ने सूरत सहित दाक्षणि गुजरात के कई इलाकों में अगले 24 घंटों में बारिश होने की संभावना व्यक्त की है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्प्लेक्ष नीयर सचीन रेल्वे स्टेश जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, एवं तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, फोन नं. 9879141480 संपादक सुरेश मौर्या (पी आर बी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)